AMOGHVARTA
ISSN : 2583-3189

झारा जनजाति के शैक्षिक स्थिति का अध्ययन

डॉ. धरणी राय, शोध निर्देशक, शिक्षा विभाग
तेजराम नायक, शोधार्थी, शिक्षा विभाग
श्री रावतपुरा सरकार विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

शोध सार

यह शोध अध्ययन भारतीय जनजातियों का समाज में मनोवैज्ञानिक अध्ययनों के विशेष संदर्भ में है। शोधार्थी के रूप में जनजातिय समस्याओं पर व्यापक अध्ययन करके ही इनकी समस्याओं से अवगत करा सकतें है, अर्थात ग्राम्यांचल में रहने वाली जनजातिय समूह की मूल संरचना, सभ्यता संस्कृति, समाजिक मनोवैज्ञानिक के व्यापक अध्ययन के पश्चात ही हम इनके मूल समस्याओं को समझ सकते है।

मुख्य शब्द

झारा जनजाति, मनोवैज्ञानिक, शिक्षा, सम्यता.

प्रस्तावना

शिक्षा का प्रारंभ प्रागेतिहासिक काल से ही प्रारंभ माना जाता है। सर्वप्रथम मनुष्य ने वातावरण के अनुकुल ढलने का एवं आचरण करने का प्रयास किया। मानव बुद्ध बल के आधार पर वातावरण से अनुकुलन करने में सफल हो जाता है और यही से शिक्षा प्रारंभ हो जाती है। शिक्षा एक सहज एवं स्वभाविक प्रक्रिया है जो जन्म से मृत्यु पर्यन्त चलती है। माता के गर्भ मे ही बालक की शिक्षा प्रारंभ हो जाती है। जन्म के पश्चात् माता–पिता उसे बोलना सिखाते है, कुछ बडा होने पर उठना–बैठना, चलना–फिरना, खाना–पीना अर्थात् आचरण के नियम सिखाते है। इसके पश्चात वह विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करता है। समाज मे रहकर रीति–रिवाज सीखता है। यह सीखने की प्रक्रिया जीवन पर्यन्त चलती रहती है, यही शिक्षा है।

भारत देश गाँव में बसता है अर्थात् देश के ग्रामीण क्षेत्रों में एक बड़ी आबादी निवास करती है, ये ग्रामीण क्षेत्र भारतीय हृदय की धड़कन के समान धड़क रही है। अर्थात् भारतवर्ष की पहचान है गाँव, और इस हृदय की धड़कती हुई धड़कन है ग्रामीण अंचल। यह आबादी मानव विकास के समस्त सूचकांकों में सबसे पीछे है। ये आज विकास के चरमोत्कर्ष युग में भी आदिम अवस्था में जीवन व्यतीत करते है। ये बाह्य कारकों से प्रभावित हुए है, परंतु इनकी जीवन एवं रूढ़, सांस्कृतिक परंपराओं ने इन्हें बाह्य लोगां के सम्मिश्रण से पृथक रखा है, इन्हें हम वनवासी, कबीली आबादी, या जनजाति के नाम से संबोधित करते है, उपरोक्त शब्दों का विवेचनात्मक अर्थ ऐसा मानव समूह है जो सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक विकास की दृष्टिकोण से पिछड़े हुए है। भारतीय संविधान में अनुसूचित जनजाति कहा गया है। वर्तमान में जनजातियॉ अन्य समय की तुलना में बाह्य कारकों से अत्यधिक संपर्कित हुई है। बाह्य सौंदर्य एवं चकाचौंध भरा परिवेश अब जनजातियों की आवश्यकताऐं बनती जा रहीं है, जिससे इनकी जीवन शैली एवं सामाजिक – सांस्कृतिक परिवेश में तीव्रगामी परिवर्तन देखे जा सकते है, यहां की कला संस्कृति बहुत ही सभ्य है, इसके बावजूद ग्रामीण क्षेत्र का विकास कहीं न कहीं अवरूद्ध रहा है। जहाँ तक विकास की बात आती है सर्वप्रथम गाँव में रहवासी जनजातिय समूह की बात आती है। यह जनजातिय समूह वास्तविक रूप से अपना विकास नही कर पायी है, इसका कारण इन क्षेत्रों में पर्याप्त साधन संसाधनों के साथ–साथ उनके मानसिक सोंच की कमी मानी जाती है, परंतु वास्तविक कारणों की जानकारी के अभाव में जनजातिय विकास के समाजिक,

मनोवैज्ञानिक कारणों या इनके पिछड़ेपन का पता नही चल पाता है।

यह शोध अध्ययन भारतीय जनजातियों का समाज में मनोवैज्ञानिक अध्ययनों के विशेष संदर्भ में है। शोधार्थी के रूप में जनजातिय समस्याओं पर व्यापक अध्ययन करके ही इनकी समस्याओं से अवगत करा सकतें है, अर्थात ग्राम्यांचल में रहने वाली जनजातिय समूह की मूल संरचना, सभ्यता संस्कृति, समाजिक मनोवैज्ञानिक के व्यापक अध्ययन के पश्चात् ही हम इनके मूल समस्याओं को समझ सकते है। भारत के विभिन्न प्रदेशों में ग्रामीण तथा नगरीय अंचलों से दूर जंगलों, पहाड़ियों, घाटियों, तराइयों आदि क्षेत्रों में आदिम अवस्था में रहने वाले लोगों को जनजाति, वन्य आदिम जाति आदि विभिन्न नामों से संबोधित किया जाता है। भारतीय संविधान में इन लोगों को "अनुसूचित जनजातियों" के नाम से संबोधित किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. झारा जनजाति के पुरूषों के शैक्षिक स्थिति का अध्ययन करना।
2. झारा जनजाति के महिलाओं के शैक्षिक स्थिति का अध्ययन करना।
3. झारा जनजाति के पुरूष एवं महिलाओं के शैक्षिक स्थिति का अध्ययन करना।

झारा जनजाति

भारत विविधताओं का देश है, भारत की अनेंक विविधताओं में से एक विविधता है जाति विविधता, जनजातिय लोग भारत के हर क्षेत्र में पाए जातें हैं, जनजाति आज विकास के चरमोत्कर्ष युग में भी आदिम अवस्था में जीवन व्यतीत करते हैं। ये बाह्य कारकों से प्रभावित हुए हैं, परंतु इनकी जीवन एवं रूढ़, सांस्कृतिक परंपराओं ने इन्हें बाह्य लोंगों के सम्मिश्रण से पृथक रखा है। इन्हें हम वनवासी, कबीली आबादी, या जनजाति के नाम से संबोधित करते है। उपरोक्त शब्दों का विवेचनात्मक अर्थ ऐसा मानव समूह है जो सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक एवं आर्थिक विकास की दृष्टिकोण से पिछड़े हुए है। भारतीय संविधान मे अनुसूचित जनजाति कहा गया है। प्रस्तुत शोध छत्तीसगढ़ के रायगढ़ जिले में निवास करने वाली झारा समुदाय से संबंधित है।

भारत सरकार द्वारा जनजाति उसे कहा जाता है जो भारतीय संविधान के अनुच्छेद– 341, 342 के अंर्तगत शामिल किया गया है जिसमें स्पष्ट नाम झारा जनजाति या उप नाम उल्लेख वर्णित नही है, किन्तु गोड़ जाति की उप जाति झरेका वर्णित है, जिसके आधार पर अनेक झारा परिवारों का जाति प्रमाण पत्र भी बना हुआ है। इसी झरेका को आधार मानकर एवं जनजातियों के संबंध में अनेक विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाओं को आधार मानकर इस अध्ययन में झारा सामुदाय को झारा जनजाति के रूप में प्रयुक्त किया गया है जो कि शिल्पकार्य कर करे है एवं जनजातिय जीवन व्यतीत कर रहे है। जो कि यह इसी अध्ययन के लिए किया गया है। इसके आधार पर कोई भी झारा परिवार शासन के समक्ष दावा नही कर सकता। झारा परिवारों से मिलने पर यह पता चला कि उनका उपनाम यदि झारा लिखते है तो जाति प्रमाण पत्र नही बनता , जिसके लिए वे एवं अनेक समाजसेवी संस्थाऐं प्रयास कर चुके है एवं प्रयासरत् है। इस कारण अनेक परिवार के सदस्य अब झरेका उपनाम भी लिखने लगें है, किन्तु बुजुर्ग झाराओं इस संबंध में बात करने पर बताते है कि हमारी पहचान झारा ही है और हम जनजातिय जीवन ही व्यतीत कर रहे है, जिसमें किसी भी प्रकार का संशोधन नही करना चाहतें।

झारा समुदाय भारत देश के अनेंक राज्यों छत्तीसगढ़, ओड़िसा, झारखंड, एवं अन्य राज्यों मे पाये जाते हैं, ये घुमंतू जनजाति होते हैं, अपने कला के नाम से जाने जाना वाला यह समुदाय अपने कार्यो के अभाव में अनेक स्थानों में भ्रमण कर अपने कलात्मक कार्य करतें है, एवं अनेक स्थान ऐसे हैं जहाँ पर रोजगार एवं व्यवसाय के संभावनाओं के कारण निवासरत है।

झारा समुदाय अपने कला कृति के लिए विश्व प्रसिद्ध है। इनके द्वारा मुख्य रूप से मूर्ति कला का कार्य किया जाता है। झारा सामुदाय के लोग अपने कार्य में महानायक है जिनके कारण अनेक झारा शिल्पकारों को राष्ट्रपति

पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है, इनके द्वारा की जाने वाली शिल्प कला को ढ़ोकरा कला के नाम से जाना जाता है। ये कृतियाँ प्राचीन काल के मोम उच्छिष्ट (Lost- Wax Proces) प्रणाली के आधार पर बनातें है।

जनजातिय अध्ययन देश विदेश मे किए गए, जिनका एक दूसरे के ऊपर प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रभाव देखने को मिला। झारा समुदाय के अंतर्गत विभिन्न प्रकार के उनके कलाओं को लेकर अध्ययन किए जा चुके है, जिनमे भट्टाचार्य सौरिश, चटर्जी शरभजीत (2015), घोष अमृता (2012), झा संतोष कुमार (2016), स्मिथ डेविड (2001), प्रमुख है, किन्तु झारा समुदाय के समाज शिक्षा के क्षेत्र मे अभी तक किसी प्रकार के शोध कार्य शोधार्थी को अप्राप्त है। झारा समुदाय भी बाह्य कारकों के संपर्क से प्रभावित हो रही है, जिससे इनके पारंपरिक जीवन विधि मे मूलभूत परिवर्तन परिलक्षित हो रहें है। झारा शिल्प समुदाय के लोगों को आर्थिक और मानसिक विकास हेतू प्रशासनिक कयावाद भी किए जा रहें हैं, लेकिन समय के साथ उनकी स्थिति दिन पर दिन गिरती जा रही है जिसकी वास्तविक सत्यता की जॉच, एवं मानसिक विकास हेतु इस झारा समुदाय पर अध्ययन अन्य समुदायों की भाँति आवश्यक है।

शैक्षिक स्थिति

मिश्रा, (2001) साक्षरता के लिए स्कुल और गॉव की दूरी महत्वपूर्ण कारक है, लोगों मे पढ़ने की अभिवृत्ति को बढ़ती जा रही है, साक्षरता बढ़ने के साथ – साथ अनपढ़ लोंगों की संख्या मे पर्याप्त वृद्धि हुई है। पवार, चौधरी, एवं यादव, (1991) के अनुसार जनजातियों मे पढ़ने की अभिवृत्ति है, और उनको यह भी ज्ञात है कि निरक्षरता उनके स्वंयं का शोषण का प्रमुख कारण है। सेन, (1982) ने बताया कि एक ओर जहाँ जनजातिय परिवारों में बच्चों को शिक्षा के लिए कोई प्रोत्साहन नही मिल पाता दूसरी ओर वे स्वयं को वे सामान्य जाति के छात्रों के समक्ष हीन महसूस करते है।

विकास तभी संभव होता है जब परिवर्तन होते है, एवं नवीनताओं को स्वीकार किया जाए, यह परिवर्तन आयु समूहो मे वर्तमान समय मे प्रतीत हो रहा है। वर्तमान युवा पीढ़ी नवीनताओं को स्वीकार कर रहे है एवं उनमे आवश्यकतानुसार परिवर्तन भी देखने को मिलता है। मासीवाल, (2013) ने बताया कि कुमाउॅनी सामुदाय पहले गाँवों में, पहाड़ों मे अपना पुरानी परंपराओं के अनुसार जीवन व्यतित करते थे। अपनी शिक्षा रोजगार आदि के लिए ये लोग अपने राज्यों से स्थानांतरित होकर मुंबई मे स्थापित हो गए, अपनी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए इस सामुदाय के लोंगों ने बाहर में बसे अपने सामुदाय के साथियों को एकजुट करने के लिए अथक प्रयास किए है। उन्हीं प्रयासों के फलस्वरूप आज कुमाउॅनी सामुदाय विभिन्न मण्डलों के माध्यमों से अपनी भाषा, लोक संस्कृति, लोकनृत्य, लोकनाट्य, लोककला को नई पीढ़ी तक पहुँचा रहें है।

माध्यमिक शिक्षा की समाप्ति के उपरांत उच्च शिक्षा प्रारंभ होती है। उच्च शिक्षा महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों, विशिष्ट शिक्षा संस्थाओं आदि में प्रदान की जाती है। प्राचीन तथा मध्य काल के कुछ उच्च शिक्षा केन्द्र विश्व प्रसिद्ध थे जिनमें अध्ययन करने के लिए दूर–दूर से छात्र आया करते थे, परन्तु दुर्भाग्य से कालान्तर में यह परम्परा नष्ट हो गई तथा आधुनिक विज्ञान व तकनीकी के विकास के साथ–साथ पाश्चात्य देश उच्च शिक्षा व अनुसंधान के क्षेत्र में अग्रणी हो गये। इसके परिणामस्वरुप भारत में आधुनिक विश्वविद्यालयों की स्थापना की आवश्यकता महसूस की गई।

चर

प्रस्तुत लघु शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा स्वतंत्र चर के रूप में झारा जनजाति के पुरूषों एवं महिलाओं को एवं आश्रित चर के रूप में उनके शैक्षिक स्थिति को लिया गया है।

परिकल्पनायें

$\mathbf{H_1}$ झारा जनजाति के पुरूषों के शैक्षिक स्थिति उच्च होगी।

$\mathbf{H_2}$ झारा जनजाति के महिलाओं के शैक्षिक स्थिति उच्च होगी।

$\mathbf{H_{01}}$ झारा जनजाति के पुरूष एवं महिलाओं के शैक्षिक स्थिति में कोई सार्थक अंतर नही पाया जायेगा।

अध्ययन की सीमाऐं

यह अध्ययन छत्तीसगढ़ राज्य में स्थित रायगढ जिले के झारा आदिवासियां तक सीमित है। यह अध्ययन झारा जनजातियों के आर्थिक एवं शैक्षिक स्थिति के अध्ययन तक सीमित है।

शोध विधि

अतः प्रस्तुत शोध मे शोधकर्ता द्वारा शोध विधि में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। परिकल्पनाओ के विश्लेषण हेतु शोधार्थी द्वारा रायगढ जिलें के झारा जनजाति के 300 पुरूषों एवं 300 महिलाओं का आकड़ा लिया गया हैं।

उपकरण

प्रस्तुत शोध में शैक्षिक स्थिति को मापने के लिए शोधार्थी द्वारा V V Malayya द्वारा निर्मित Adul ducation Achievement Test (AEAT) का प्रयोग किया गया है । जिसके अंतर्गत पॉच खण्ड के 75 प्रश्नों का समावेश किया गया है। परिकल्पना की जांच करने के लिए शोधार्थी ने प्राप्त आंकडों का टी टेस्ट मान निकाला है। जिसका विवरण अग्रलिखित चित्र में प्रदर्शित है।

सारणी क्र. 1

क्र. सं.	प्रतिदर्श	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D)	t-मान	सार्थकता स्तर
1.	झारा जनजाति के पुरूष	300	34.75	1.92	0.1249	0.01 स्तर पर सार्थक (स्वीकृत)
2.	झारा जनजाति की महिलाऐं	300	34.73	2		0.05 स्तर पर सार्थक (स्वीकृत)

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

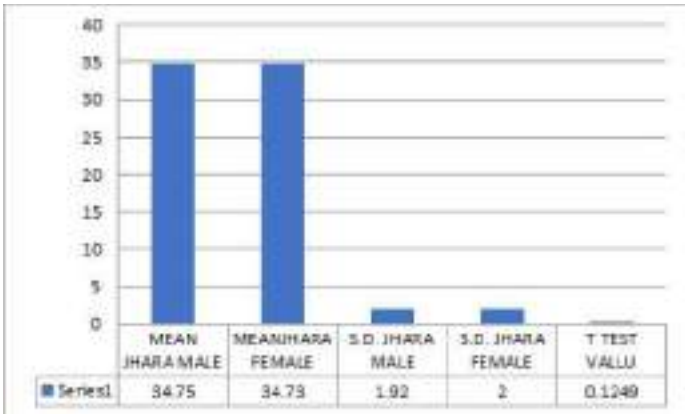

विवेचना

उपर्युक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि झारा जनजाति के पुरूषों एवं महिलाओं की स्थिति सामान्य है। सार्थक अन्तर हेतु t परीक्षण का मान 0.1249 है जो कि सार्थकता स्तर 0.01 तथा कि 598 पर t के सारणी मान 2.581 है । टी परीक्षण का मान 0.1249 सारणी के मान 2.581 से कम है एवं सार्थकता स्तर 0.05 तथा कि 598 पर t के सारणी मान 1.962 है, टी परीक्षण का मान 0.1249 सारणी के मान 1.962 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना (H_3) झारा जनजाति के पुरूष एवं महिलाओं के शैक्षिक स्थिति में कोई सार्थक अंतर नही पाया जायेगा, को स्वीकृत किया जाता है अर्थात् झारा जनजाति के पुरूष एवं महिलाओं के शैक्षिक स्थिति में सार्थक अंतर नही पाया जायेगा।

सुझाव

जनजातिय आदिवासी महिलाओं एवं पुरूषों के व्यवसायिक रूचि, शैक्षिक, सामाजिक – आर्थिक विकास के लिए शिक्षा एक मुख्य आवश्यकता है। शिक्षा के अभाव में झारा समुदाय का विकास की कल्पना करना अनुचित होगा। झारा समुदाय के विकास के लिए शैक्षिक विकास के साथ–साथ सामाजिक विकास एवं आर्थिक विकास भी अत्यंत आवश्यक है जिससे इस समुदाय के पुरूष और महिलाएँ अपना सर्वांगीण विकास कर सके।

झारा समुदाय के लोगों के लिए जो कलात्मक कार्य कर रहें हैं उनके सामाजिक एवं आर्थिक विकास के लिए निम्नलिखित सुझाव दिए जा सकते हैः

1. प्रत्येक शिक्षा संस्था मे समाजिक और समुदायिक सेवा के विकास के लिए जनजातिय विकास के कार्यक्रम किया जाना चाहिए।
2. प्रत्येक शालाओं मे विद्यार्थियों मे परस्पर एकता, देषप्रेम, न्याय, भाईचारे, एवं आपसी प्रेम का पाठ पढ़ाया जाना चाहिए।
3. शिक्षा संस्थानों के अलावा समाजिक संस्थाओं के द्वारा गोष्ठियों हस्त चित्र, नाटक, प्रश्नोत्तर आदि का आयोजन कर ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में जनजातिय उन्मुलन कार्यक्रम किया जाना चाहिए।

संदर्भ सूची

1. भट्टाचार्य, सौरिश (2011), *''चित्रकोला इन्टरनेशनल मैक्जीन ऑन आर्ट एण्ड डिजाईन,* 01(02), अगस्त 2011, 10–13,
2. चटर्जी, सुभरजीत (2015), ''द एनसिएन्ट क्राफ्ट ऑफ ढोकराः ए केस स्टडी एट बीकना एण्ड दरियापुर इन वेस्ट बेन्गॉल'' *इन्टरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ इन्टरडिसिप्लीनरी एण्ड मल्टीडिसिसप्लीनरी स्टडी,* 01(04), मई 2015, 19–23,
3. झा, कृष्णकुमार (1987) ने अपने अध्ययन ''बस्तर की जनजातियों की शिक्षा स्थिति का विश्लेषणात्मक अध्ययन ''अप्रकाशित शोध, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.), 392–397
4. पटेल आज्ञामनी (2008) रायगढ़ जिले के अनुसूचित जनजातियों का स्वास्थ्य एवं पोषण स्तर (उराव जनजाति के विशेष संदर्भ मे), अप्रकाशित शोध, के.जी. कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, रायगढ़ (छ.ग.) 171–185
5. प्रेमी, जितेन्द्र कुमार; सोनी, प्रवीण कुमार; नागवंशी, बृजेश कुमार; खुटे, डिकेन्द्र (2013). विशेष पिछड़ी (आदिम) जनजाति कमारः एक नृजातिवृतांततात्मक परिदृश्य. *जे. ह्यूमेनेस्टिक एण्ड सोशल साईन्स;* 4(1) :जनवरी–मार्च, 179–184
6. सिंह सोमेश नारायण (2011) ''चित्रकूट मण्डल के अनूसूचित जनजाति का शैक्षिक सर्वेक्षण'' अप्रकाशित शोध, वीर बहादुर सिह पूर्वाचल विश्वविद्यालय,जौनपुर, http://sodhganga.inflibnet.ac.in.

****